ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
01	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	ओमप्रकाश	3-7
02	दलित नारी विमर्श : एक दृष्टिकोण	डॉ. सुरेश कानडे	8-11
03	इस्लाम और दलित व दलित मुसलमान	डॉ॰ इबरार खान	12-17
04	इक्कीसवी सदी की कविताओं में दलित विमर्श	प्रो.डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	18-20
05	'आल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी जीवन	प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार-निकम	21-24
06	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वसुंधरा देसाई	25-29
07	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	30-36
08	मणिका की कहानी में स्वच्छंद नारी	डॉ.घोडके अरविंद अंबादास	37-39
09	'धार' उपन्यास आदिवासी पीड़ा का दस्तावेज	प्रा.डॉ.भारती बी.वळवी	40-46
10	दलित साहित्य में स्त्री विमर्श	डॉ.सुधीर गणेशराव वाघ	47-49
11	हृषिकेश सुलाभ के नाटक में आदिवासी विमर्श	डॉ.अशोक शामराव मराठे	50-54
12	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य में चित्रित नारी चेतन	प्रा.नितिन विठ्ठल पाटिल	55-59
13	'दंडकारण्य' कविता : आदिवासी अस्मिताबोध	प्रा.सुपर्णा संसुद्धी	60-61
14	'पाँचवाँ स्तंभ' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा, डॉ.दिनानाथ मुरलीधर पाटील	62-65
15	कबूतरा जनजाति की त्रासदी : 'अल्मा कबूतरी'	प्रा.पोटकुले हिरा तुकाराम	66-68
16	किन्नरों की आपबीती लक्ष्मी की जबानी- ('मै लक्ष्मी...मै हिजडा'आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)	प्रा.सौ.कविता संदीप तळेकर	69-73
17	स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ एवं निर्मल वर्मा की कहानी माया दर्पण	डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	72-80
18	`विजन` उपन्यास के स्त्री पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व	डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी	81-84
19	साहित्य एवं नारी विमर्श	संगीता राव	85-87
20	समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना	प्रा.रज्जाक शेख	88-90
21	दलित साहित्य की अवधारणा	प्रा.पाटोले अनीता किसन	91-93
22	स्त्री चेतना का उपन्यास – `मुझे चाँद चाहिए`	प्रा.डॉ.पूनम त्रिवेदी	93-96

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal , Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email: aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors:-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associated Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Asst. Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** Asst. Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh Samadhan Guruchal,** Asst. Professor (English) Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** Asst. Professor (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** Asst. Professor (Marathi) Dr. A.G.D.Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

-:Review Committee : -

- **Dr. Maxim Demchenko** , Associated Professor, Moscow State Linguistic University, Institute of International Relationships, Moscow, Russia
- **Dr. Vasant G. Mali,** Dept. of Hindi, A. B. College Deogaon (R) Tal. Kannad Aurangabad [M. S.] India.
- **Dr. Rekha P. Gajare,** Head, Dept. of Hindi, P. O. Nahata College, Bhusawal Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** Asst. Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]

AMRJ Disclaimer :

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for any consequences arising from the exercise of Information contained in it.

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

'विजन' उपन्यास के स्त्री पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व

डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी
असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
लक्ष्मी - शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी, अलिबाग

मनोविज्ञान एक नवीनतम विधा है जो चिकित्सा विज्ञान की देन है। मनोविज्ञान की एक पद्धती है मनोविश्लेषण जिसके द्वारा मानसिक एवं स्नायविक रोगीयों के उपचार किया जा सकता है। इसके जनक है सिगमंड फ्रायड। तथापि फ्रायड के इस पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का श्रेय फ्रायड के सहयोगी शिष्य एडलर तथा कार्ल जुंग को ही दिया जाता है। फ्रायड मनुष्य के व्यक्तित्व के तीन भाग स्वीकार करते है : इद (Id) इगो (Ego) सुपर इगो (Super Ego) अर्थात प्राकृतिक सत्व, अहं, और परम अहं। इद का उद्देश्य मनुष्य को कष्टकारक तनावों से मुक्त करना होता है। मनुष्य जब कभी तनावों का अनुभव करता है तब 'इद' उस वृत्ति की तुष्टि के लिए प्रयत्नशील होता है। इसलिए फ्रायड इसे सुख सिद्धांत (pleasure principle) भी कहते है। अहं मनुष्य के व्यक्तित्व का चेतन अंश होता है। उसमें बुद्धि की प्रधानता होती है इसलिए अहं से सभी क्रियाएँ सोच समझकर की जाती है। प्रतिकूल परिस्थिति में किसी भी भावना को बाहर नहीं आने देता, उल्टा कठोरतापूर्वक उसका दमन करता रहता है। इसे फ्रायड वास्तविक सिधान्त (Reality principal) के नाम से अभिहित करते है। परम अहं औचित्य – अनौचित्य का विचार न करते हुये इच्छा या भावना को बाहर जाने का आदेश देता रहता है। इसे फ्रायड पूर्णतावादी या आदर्शवादी (perfection principle) सिधान्त मानता है। इसी तरह फ्रायड मनुष्य के मन की भी तीन अवस्थाएँ बताते है :

1) अचेतन मन (unconscious)

2) चेतन मन (conscious)

3) अवचेतन मन / अर्धचेतन मन (foreconscious)

अपने चेतन मन द्वारा मनुष्य बाह्य जगत से संपर्क बनाएँ रहता है। विचार, मनन, विवेचन, विश्लेषण आदि चेतन मन की क्रियाएँ है। कुछ भावनाएं चेतन मन में रहकर अपनी पूर्ति कर मन से बाहर होती है। परंतु कुछ भावनाओं की पूर्ति नहीं हो पाती। वह अर्धचेतन मन द्वारा अचेतन मन में फेंक दी जाती है और वहाँ से अचेतन मन का विषय बन जाती है। वहाँ वे अतृप्त तथा दमित भावनाएं, कुंठाएँ बनकर अपनी पूर्ति के लिए अनुकूल परिस्थिति की प्रतिक्षा करती है। इस प्रकार अचेतन चेतन मन पर बराबर दबाव डालता रहता है जिसके चेतन मन कुछ अस्वाभाविक क्रियाएँ करता है जिनसे अचेतन में पड़ी कुंठित भावनाओं की पूर्ति हो सकती है।

मनुष्य का अर्धचेतन मन सामाजिक मान्यताओं पर ध्यान देता है। वह चेतन मन और अचेतन मन के बीच की कड़ी बनता है। प्रचलित या प्रतिकूल सामाजिक मान्यताओं के कारण चेतन मन किसी विचार, इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाता तब अर्धचेतन मन सतर्क प्रहरी की तरह उस अपूर्व विचार, इच्छा या भावना को चेतन मन से अचेतन मन में बलात फेंक देता है। जिसका वहाँ काम कुंठा अर्थात

©Copyright 2020 *AMRJ* . All Rights Reserved

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

काम - ग्रंथि में रूपांतर हो जाता है। इस प्रकार की काम कुंठा की संख्या अधिक हो गयी तो उन काम कुंठाओ के कारण मनुष्य बेचैन, असंतुलित और असामान्य सा बना रहता है।

फ्रायड, एडलर तथा कार्ल जुंग के विचारों का प्रभाव साहित्य में प्रकट होने लगा। प्रेमचंद युग से ही इन सिद्धांतों का प्रभाव प्रेमचन्द, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा आदियों के साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का प्रारम्भ जैनेन्द्र से माना जाता है क्योंकि उनके उपन्यासों में फ्रायड का स्पष्ट प्रभाव विद्यमान है। हिन्दी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को प्रौढ़ रूप देने का श्रेय अज्ञेय जी को है। अज्ञेय में मनोविज्ञान की गहन क्षमता है। अज्ञेय के बाद अनेक साहित्यकार आगे आयें जिन्होने मानवीय स्वभाव में निहित अंतर्द्वन्द्व को एक नया अर्थ दिया है। "इस शताब्दि के ज्ञानवृक्ष की सबसे तरुण नव जवान स्फूर्त कोमल तथा लचीली शाखा मनोविज्ञान की है। और वह नवयौवन की उमंग में सारे विश्व पर छात जाना चाहती है।"[1]

बदलते कालखंड में महिला लेखिका भी पीछे नहीं रहीं उन्होने केवल नारी की ही विभिन्न समस्याओ को प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि विषय और नविनता के प्रयोग के क्षेत्र में वह पुरुषों के भी आगे निकल गयी है जो सुनहरे भविष्य का शुभ लक्षण है। मैत्रयी पुष्पा ऐसी ही एक सशक्त लेखिका है जिन्होंने अनेक अनकहे, अनछुए विषयों को उदघाटित कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया है। वैसे उनके साहित्य के तीन महत्वपूर्ण आयाम है ग्रामीण चित्रण, आंचलिक चित्रण और स्त्री चेतना तीनों आयाम अत्यंत सशक्त है। अपनी रचनाओं के स्त्री पात्रों के संबंध में स्वयं मैत्रयी पुष्पा कहती है "मैंने स्त्री को उसके पूरे व्यक्तित्व के साथ आकार देने की कोशिश की है।" उनके द्वारा लिखित 'विजन'उपन्यास वर्तमान समाज का आईना है। इसमें उन्होने स्त्री शक्ति के नए आयाम खोजने और खोलने का साहसिक प्रयोग किया है। प्रस्तुत उपन्यास में दो कथाएँ अंकित है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा की। डॉ. आभा का चरित्र क्रांतिकारी है तो डॉ. नेहा का घुट घुट कर जीनेवाला कुंठित चरित्र है। नेहा की घनीभूत वेदना को शब्दबध्द करने का सफल प्रयास मैत्रयी पुष्पा ने किया है। डॉ. नेहा भटनागर विजन उपन्यास की प्रमुख पात्र है। वह गरीब परिवार से थी पर अपने प्रतिभा और कौशल के बलपर एक कुशल आय सर्जन बन जाती है । नेहा की काबिलियत देखकर डॉ आर. पी. शरण उसे अपनी बहू बनाते है । ससुराल की ऊंची आन बान , शरण आई सेंटर, और पती के रूप में डॉ. अजय को पाकर नेहा को लगा जैसे उसके सारे स्वप्न साकार होंगे परंतु उसके सारे स्वप्न कुछ ही दिनो में बिखर गए। अँधेरों को प्रकाश की ओर ले जाने में माहिर डॉ. नेहा को पिंजरे में बंद होना कतई पसंद न था परंतु किमती कपड़ों, जेवरों, और भव्य अलीशान कोठी में वह कैद हो जाती है। केवल सुंदर, सुघड़ एवं संस्कारी दासी के अलावा उसका कोई अस्तित्व उस घर में नहीं था। एक आदर्श पत्नी और बहू की तरह साज – श्रृंगार कर पुजापाठ करती, प्रसाद बाटती, व्रत उपवास करती। और देवताओं के आगे भूखे पेट सिर झुकाकर अजय की सफलता का वरदान मांगती। ससुराल के खिलाफ विद्रोह करने का मन तो करता है लेकिन बहू होने के कारण चुप बैठने के लिए विवश है। एक दिन हताश होकर मंदिर में प्रार्थना करती है "भगवान वर दो, शक्ति दो, सहिष्णुता दो और साथ ही विस्मृति दो ... मै अपना डॉक्टर होना भूल जाऊ। जो काम दिया गया है करती रहूँ। मुझे कभी ऐसा सपना न आयें जिसमें किसी मरीज का सामना हो।"[2] यहीं मेरे जीवन और गृहस्थ की सुखशांति का मूल मंत्र है। शरण आई सेंटर में डॉ. नेहा एक रिसेप्शनिष्ट बन जाती है। ससुर आर. पी. शरण डॉक्टर होकर भी नेहा की उपेक्षा करते है। उसकी प्रगल्भता को दबाएँ रखते है ताकि वह डॉ. अजय से श्रेष्ठ डॉक्टर न

©Copyright 2020 AMRJ . All Rights Reserved

ISSN 2582-5429(online)
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)
www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

साबित हो। नेहा पर बचपन से ही नैतिक मूल्यों के संस्कार थे। इसीलिए शरण आई सेंटर में चल रहें धांधलेबाजी से वह आहत होती है। रोगियों का शोषण होता देख दुखी होती है "जीवन में किसी प्रकार की बेईमानी नहीं करूंगी। सदा वहीं कम करूंगी जो रोगियों के हित में हो " यह सौगन्ध खानेवाली नेहा धधकती आग में जलती है। परंतु उसकी अनकही बातें उसके सिने में ही दफन होती है।

डॉ. नेहा जिद करके सीनियर रेजीडेंसी ज्वाइन करने दिल्ली आ जाती है। परंतु कुछ ही दिनों में पति डॉ. अजय उसे लेने आ जाते है क्योंकि वह अपनी आगे की पढ़ाई के लिए लंदन जा रहे थे। अपनी पढ़ाई के लिए अजय नेहा की पढ़ाई अधूरी छोड़ता है। एक बार नेहा अपने ससुर की गैरहाजिरी में 'डे केयर सर्जरी' कर मरीज को दो घंटे में घर छोड़ देती है। ससुर गुस्सा इसलिए हो जाते है कि यदि मरीज अस्पताल मे एड्मिट रहता तो कुछ पैसे बनते परंतु नेहा ने मरीज के हित में सोचा था अतः ससुर डाटते हुए कहते है "आइंदा से तुम ऑपरेशन नहीं करोगी"[3] यह वाक्य नेहा की विद्वत्ता प्रतिभा एवं कुशलता को ललकरता है लेकिन नेहा मिसमिसाकर रह जाती है। नेहा का पती भी उसका अपना न था वह तो बस अपने पापा का बेटा था। अजय के मुंह से कभी सहानुभूति के दो शब्द नहीं निकलते। जब आँख के ऑपरेशन में मरीज की मौत हो जाती है तब दोनों बाप बेटे को बहू की याद आ जाती है। डॉ. अजय नेहा को मरीज की मृत्यु घोषित करने के लिए कहते है। " नेहा टेक एडवांटेज ऑफ यूअर वुमेन हुड"[4] उस मौत की सारी ज़िम्मेदारी डॉ. नेहा पर डालकर बाप बेटे वहाँ से निकल जाते है। इस तरह पती डॉ. अजय और ससुर डॉ. आर पी शरण से नेहा को पग पग पर उपेक्षा, अवमानना ही मिलती है। डॉ. नेहा घुटती है कुढ़ती है, शाररिक प्रताड़ना सहती है और अंत में अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। नेहा का अंतर्द्वंद्व विद्रोह का रूप नहीं धारण कर पाता। ससुर आर पी शरण और पति डॉ. अजय उच्च विद्या विभूषित डॉ. नेहा का अस्तित्व खत्म कर उसे घुट घुट कर जीने के लिए विवश करते है

प्रस्तुत उपन्यास में दूसरी कथा अंकित है डॉ. आभा की । डॉ. आभा एक कुशल सर्जन व अपने अधिकारों के प्रति जागरूक महिला है। संयुक्त सचिव की एकलौती बेटी फिर भी उसके पास अमिरी का दंभ बिल्कुल नहीं है। उसमें स्वाभिमान कूट कूट कर भरा है। पिता ने उसे हमेशा बेटे की तरह पाला था। अतः पिता के इन संस्कारों के कारण वह अपने आप को कभी पुरुषों से कमतर नहीं समझती थी । उसका व्यक्तित्व क्रांतिकारी है। फिर भी डॉ. मुकुल से विवाह के पश्चात वह अमीर अफसर की बेटी होना भूलकर गरीब ससुराल की गुणवंती बहू बनने का प्रयत्न करती है। रोबो की तरह पाव छूना, सिर ढकना , धरती पर बैठना, विवाह के शर्तों पर खरी उतरने की कोशिश करती रही। मन में बस एक ही आशा थी की ससुरालवले कभी तो समझेंगे उसका डॉक्टर होना। पती डॉ होकर भी उसे समझ नहीं पाता। उल्टा पती होने का रौब उसपर जमाना चाहता है। उसके नजर में आभा केवल उसकी पत्नी है। एक शादीशुदा औरत जिसकी जरूरत घर को अधिक है। विवाहित स्त्री का पहला कर्तव्य उसका परिवार है कहकर उसे ससुराल में ही रहने के लिए विवश करता है। पढे लिखे मुकुल के घटिया विचार देखकर आभा आहात हुई। मुकुल के व्यर्थ अहंकार के कारण दोनों में दिन-ब-दिन संघर्ष बढ़ता जाता है। एक दिन डॉ. मुकुल अपनी पत्नी डॉ. आभा को 'साली, हरामजादी और हरामखोर' जैसी गलियों की बौछार के साथ मारता - पीटता है। आभा का हृदय खंड-खंड हो जाता है। अपने पती का दानवी रूप वह भूल नहीं पाती। अतः अपने मिशन के लिए वह डॉ मुकुल को तलाक-पत्र भेजती है " तुम कह सकते हो हमारे मुल्क में पति अपनी पत्नी को पीट

©Copyright 2020 AMRJ . All Rights Reserved

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

देता है तो नया क्या है ? मानती हूँ तमाम स्त्रियाँ मर खाते खाते जीवन यापन करती रहती है।, मगर मुकुल न तो तुम उन पतियों जैसे जाहिल थे, न मैं ही उन पत्नियों जैसी लाचार ... मैं तुम्हारे उस खूंखार पौरुष पुरुषार्थ को नहीं झेल पाई। सॉरी डॉ. मुकुल! वेरी सॉरी।"[5] कहकर डॉ. आभा विवाह विच्छेद की मांग करती है। इसप्रकार डॉ. आभा स्त्रीवादी मान्यताओं के खिलाफ खड़ी होती है और अपने हक का परिचय देती है।

डॉ. आभा और डॉ.नेहा महानगरीय जीवन की उच्च शिक्षित स्त्रियाँ है पर धर्म और परंपरा ने उन्हे कमजोर बना दिया है। यह धर्म और परंपरा पुरुष प्रधान समाज ने उन पर थोपी है। लेकिन मैत्रयी के स्त्री पात्र अधिक समय तक कमजोर नहीं रहते वे उचित समय आने पर विद्रोह करते ही है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा अपनी स्थितियों और समाज के परंपरागत रूढ़ियों से संघर्ष करती हुई उससे मुक्त होने के लिए छटपटाती है। मैत्रयी पुष्पा ने आधुनिक कामकाजी नारी के समस्याओं और उलझनों को विजन उपन्यास में उठाकर स्त्री वेदना को वाणी दी है। उन्होने डॉ. आभा और डॉ. नेहा दोनों के अन्तर्मन के द्वंद्व को रेखांकित कराते हुए है अपने ढंग से मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का कलात्मक वहन किया है।

संदर्भ

1. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकर१६पृष्ठ .. धर्माणी .सुशील जी .डॉ – जैनेन्द्र :
2. विजन ५१ .मैत्रयी पुष्पा पृ :
3. विजन ४७ .मैत्रयी पुष्पा पृ :
4. विजन २०७ .मैत्रयी पुष्पा पृ :
5. विजन ११९ .मैत्रयी पुष्पा पृ :